गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; अप्रैल, २०२०

बा-बापू१५० १८६९-२०१९

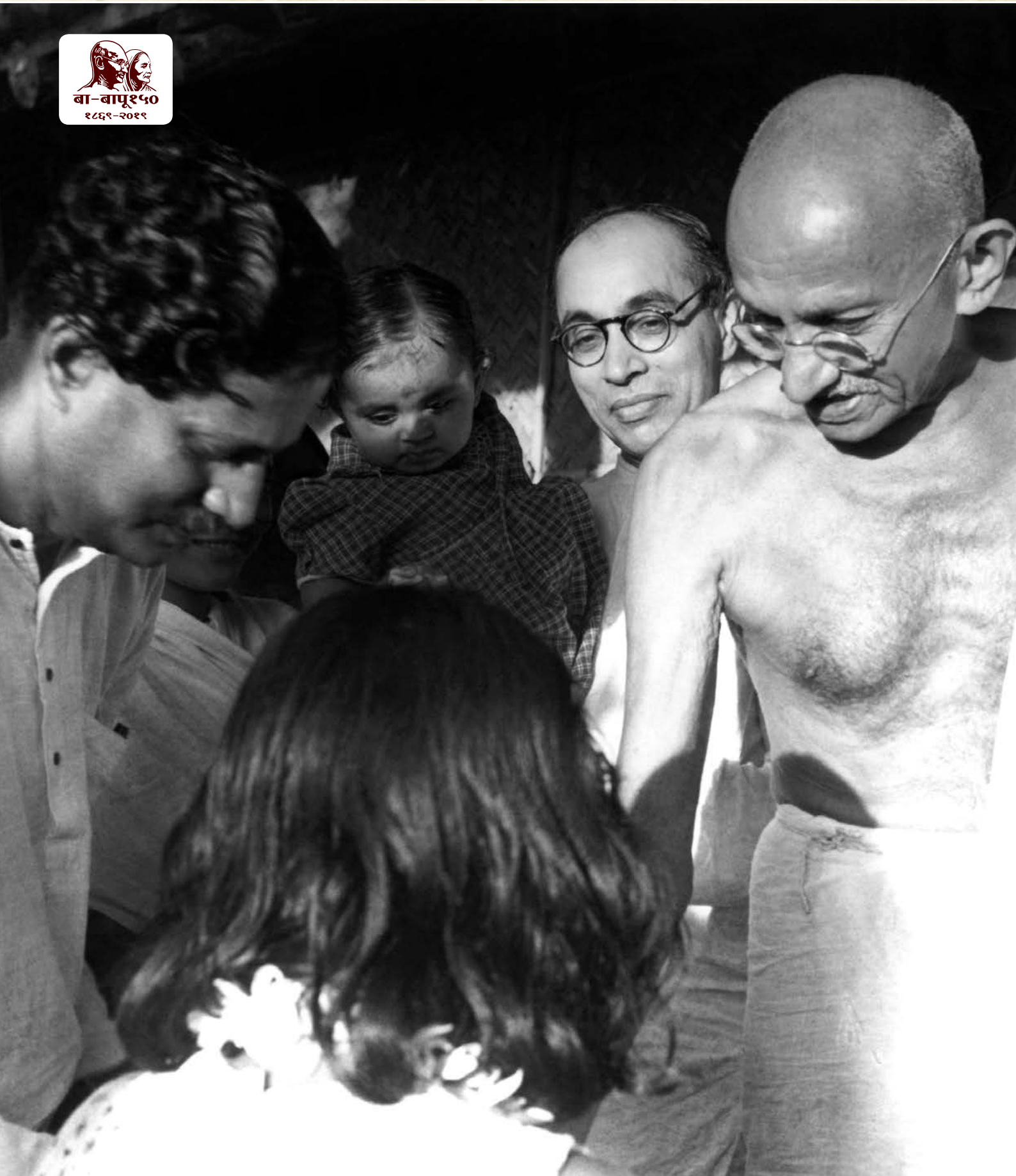

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–२, अंक ४ □ अप्रैल, २०२०

व्यायाम शारीरिक स्वास्थ्य की कुंजी है।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– ..... पृष्ठ

संपादकीय .....

आत्मकथा, प्रकरण–१३, कुलीपन का अनुभव १

COVID 19: A Wake-up Call to Heed:
Mahatma Gandhi's Prophetic Clarion Warning ३

ऐतिहासिक दांडी यात्रा के ९० साल पूर्ण ५

गाँधी तीर्थ से:

हमारा परिवार और गाँधी विचारों का अधिष्ठान–*अशोक जैन*.... ८

फाउण्डेशन की गतिविधियां..... १०–१३

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा
योगेश संधानसिवे एवं भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मोबाईल: 9404955272;
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net;
ई–मेल : info@gandhifoundation.net; CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि. जलगाँव– ४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*

(**पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।*)

मुखपृष्ठ छायाचित्र: महात्मा गाँधी के साथ प्यारेलाल नय्यर (पीछे) तथा नई तालीम शिक्षा (नई शिक्षा) के आर्यनायकम (बाएं), सेवाग्राम, अगस्त १९४४।

संपादकीय...

कहीं यह हमारी लालच का तो नतीजा नहीं?

वर्तमान समय में सारा विश्व गंभीर महामारी से गुजर रहा है। यह एक तरह की चेतावनी ही है कि हमें हमारी मर्यादा को किसी भी रूप से पार करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। कई बार मनुष्य अपनी सारी सीमाओं को पार कर देता है वह भी केवल अपनी संतुष्टि के लिए। प्रकृति का नियम है जो प्रकृति का हनन करता है प्रकृति उसे नष्ट कर देती है। इस संदर्भ में कई उदाहरण हमारे इतिहास के साथ जुड़े हुए है। वर्तमान में फैला कोविड–१९ या कोरोना वाईरस भी हमारे ही किए कर्मों का नतीजा ही तो है। विकास की हमारी परिभाषा को कहीं न कहीं विराम देने की आवश्यकता है, अन्यथा जिसे हम विकास कहते हैं वह हमारे लिए कब विनाश बन जाए पता भी नहीं चलेगा।

ऐसे दौर में गाँधीजी के विचार विशेष रूप से हमें मार्ग दिखा रहे हैं। उनके द्वारा कहा गया मशहूर संदेश, ''पृथ्वी हर मनुष्य की जरूरत को पूरा कर सकती है पर उनके लोभ या लालच को नहीं'' आज के दौर में चरितार्थ होता दिखाई देता है। हमें अपनी अमर्यादित लालच को सीमा में ढालने की आवश्यकता है। गाँधी विचार आधारित जीवनशैली में केवल व्यक्ति केंद्रित ही नहीं किंतु प्रकृति का हर एक जीव, जंतु व संसाधन का भी समावेश किया जाता है। इसलिए हमारे लिए आवश्यक उपभोग की सामग्री में भी विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत का अमल किया जाता है। गाँधीजी का जीवन इस बात की उत्तम गवाही देता है क्योंकि वे सादगीपूर्ण जीवन में विश्वास करते थे। सरल जीवन, उच्च विचार यह केवल बोलने के लिए ही नहीं किंतु अमल करने की बात है। हमारी जीभ को जो पसंद आए ऐसे स्वाद का आनंद लेने के लिए हमने कितनी जीव सृष्टि को नष्ट कर दिया? हमारे अपनी इंद्रियों के आनंद के लिए हमने प्रकृति के चक्र की धज्जियां उड़ा दिया। केवल इसलिए की हम आनंद ले सके, क्या यह शाश्वत आनंद है? यह आनंद नहीं बल्कि हमारे लिए एक बड़ी सी खाई निर्माण कर रहे हैं। जिसमें गिरने के अलावा किसी भी तरह का कोई पर्याय नहीं है। जब हम अपनी सीमाओं को पार करेंगे तब कहीं न कहीं प्रकृति हमें सिखाने के लिए या सज़ा देने के लिए किसी भी तरह का रूप धारण कर सकती है। अब भी समय है, Back to the nature को समझे सादगीपूर्ण जीवन को अपनाएं, प्रकृति के अस्तित्व में ही हमारा अस्तित्व समाया है इस बात को समझे। इस बार अगर कुछ नहीं सिख पाए तो फिर और कोई प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदा हमें सिखाने जरूर आएगी। निर्णय हमें करना है मर्यादा में रहना है या हमारी अमर्यादित लालच के पीछे भागना है?

इस अवसर पर इ. एफ. शुमाकर का विचार याद आ जाता है, वे कहते हैं, हमें अपने रोजमर्रा के जीवन में अहिंसा को स्थान देना चाहिए, उससे जो निर्मित होगा वह शाश्वत होगा, आनेवाली पीढ़ी के लिए हमारे द्वारा दिया गया यही सर्वोत्तम तोहफा होगा।

वर्तमान समय में फैली महामारी के इस दौर में सभी सुरक्षित रहे ऐसी कामना करते हैं।

इस अंक में सत्य के प्रयोग से अगला प्रकरण, फाउण्डेशन के रिसर्च डीन प्रो. गीता धरमपाल का महामारी के दौर में गाँधीजी के विचार आधारित एक लेख, नमक सत्याग्रह के नब्बे साल पूरे हुए है इस अवसर पर अश्विन झाला द्वारा लिखित लेख, फाउण्डेशन के संचालक श्रीमान अशोक जैन के गाँधी तीर्थ के प्रति विचार तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे है।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

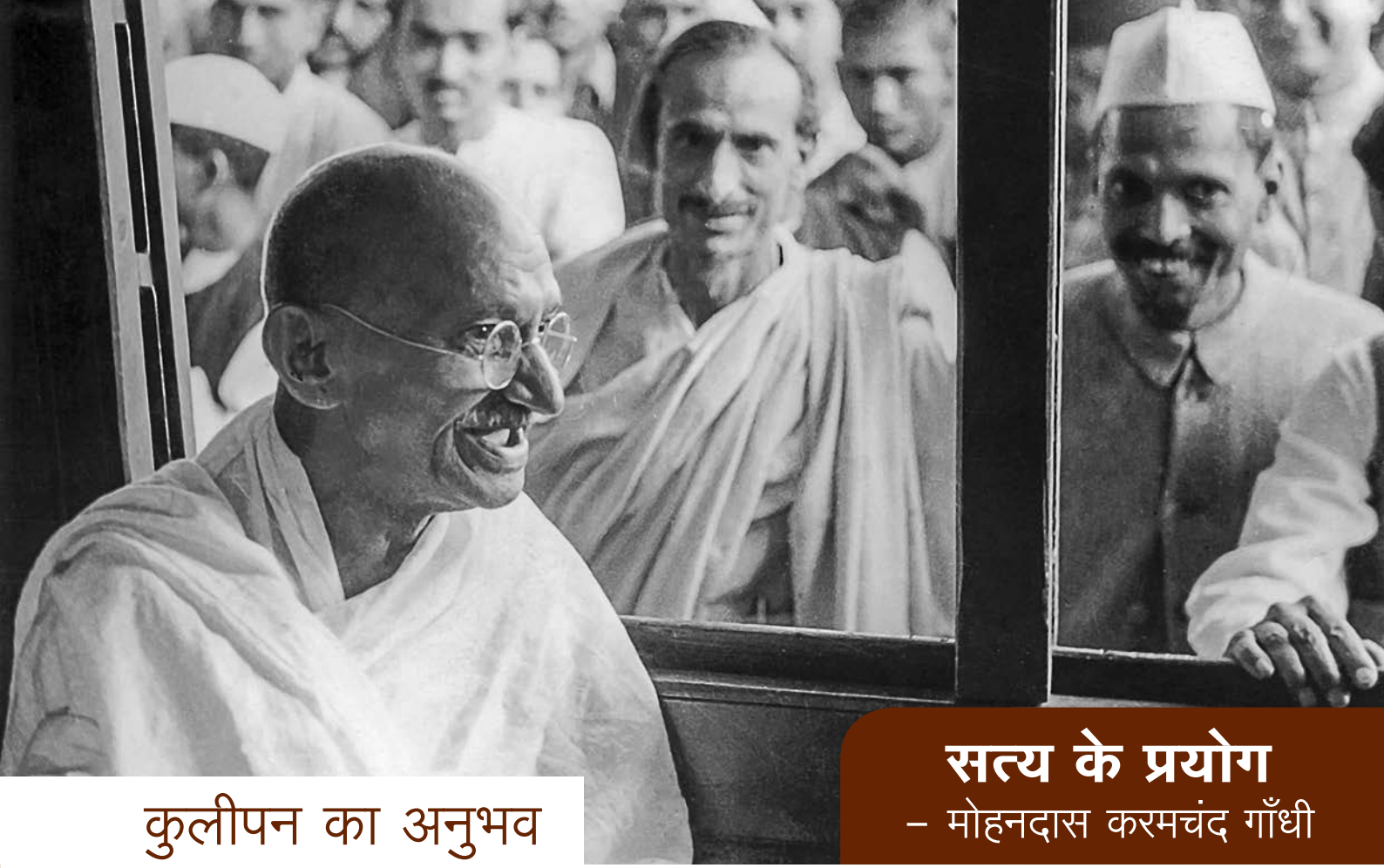

सत्य के प्रयोग
– मोहनदास करमचंद गाँधी

कुलीपन का अनुभव

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए गाँधीजी को कई तरह के अनुभव हुए थे, आरंभ में कई अनुभव अपमान जनक भी थे। उस से जुड़ी गाथा को आत्मकथा के भाग २ से प्रकरण १३ हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।*

– संपादक

ट्रान्सवाल और ऑरेन्ज फ्री स्टेट के हिन्दुस्तानियों की स्थिति का पूरा चित्र देने का यह स्थान नहीं हैं। उसकी जानकारी चाहनेवाले को 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' पढ़ना चाहिये। पर यहाँ उसकी रुपरेखा देना आवश्यक हैं।

ऑरेन्ज फ्री स्टेट में तो एक कानून बनाकर सन् १८८८ में या उससे पहले हिन्दुस्तानियों के सब हक छीन लिये गये थे। वहाँ हिन्दुस्तानियों के लिए सिर्फ होटल के वेटर के रूप में काम करने या ऐसी कोई दूसरी मजदूरी करने की ही गुंजाइश रह गयी थी। जो व्यापारी हिन्दुस्तानी थे, उन्हें नाममात्र का मुआवजा देकर निकाल दिया गया था। हिन्दुस्तानी व्यापारियों ने अर्जियाँ वगैरा भेजीं, पर वहाँ उनकी तूती की आवाज कौन सुनता?

ट्रान्सवाल में सन् १८८५ में एक कड़ा कानून बना। १८८६ में उसमें कुछ सुधार हुआ। उसके फलस्वरूप यह तय हुआ कि हरएक हिन्दुस्तानी को प्रवेश फिस के रुप में तीन पौंड जमा कराने चाहिये। उनके लिए अलग छोड़ी गयी जगह में ही वे जमीन– मालिक हो सकते थे। पर वहाँ भी उन्हें व्यवहार में जमीन का स्वामित्व नहीं मिला। उन्हें मताधिकार भी नहीं दिया गया था। ये तो खास एशियावासियों के लिए बने कानून थे। इसके अलावा, जो कानून काले रंग के लोगों को लागू होते थे, वे भी एशियावासियों पर लागू होते थे। उनके अनुसार हिन्दुस्तानी लोग पटरी (फूटपाथ) पर अधिकार–पूर्वक चल नहीं सकते थे और रात नौ बजे के बाद परवाने के बिना बाहर नहीं निकल सकते थे। इस अंतिम कानून का अमल हिन्दुस्तानियों पर न्यूनाधिक प्रमाण में होता था। जिनकी गिनती अरबों में होती थी, वे बतौर मेहरबानी के इस नियम से मुक्त समझे जाते थे। मतलब यह कि इस तरह की राहत देना पुलिस की मर्जी पर रहता था।

इन दोनों नियमों का प्रभाव स्वयं मुझ पर क्या पड़ेगा, इसकी जाँच मुझे करानी पड़ी थी। मैं अक्सर मि. कोट्स के साथ रात को घूमने जाया करता था। कभी–कभी घर पहुँचने में दस भी बज जाते थे। अतएव पुलिस मुझे पकड़े तो? यह डर जितना स्वयं मुझे था उससे अधिक मि. कोट्स को था। अपने हब्शियों को तो वे ही परवाने देते थे। लेकिन मुझे परवाना कैसे दे सकते थे? मालिक अपने नौकर को ही परवाना देने का अधिकार था। मैं लेना चाहूँ और मि. कोट्स देने को तैयार हो जाएँ, तो भी वह नहीं दिया जा सकता था, क्योंकि वैसा करना विश्वासघात माना जाता।

इसलिए मि. कोट्स या उनके कोई मित्र मुझे वहाँ के सरकारी वकील डॉ. क्राउजे के पास ले गये। हम दोनों एक ही 'इन' के बारिस्टर निकले। उन्हें यह बात असह्य जान पड़ी कि रात नौ बजे के बाद बाहर निकलने के लिए मुझे परवाना लेना चाहिये। उन्होंने मेरे प्रति सहानुभूति प्रकट की। मुझे परवाना देने के बदले उन्होंने अपनी तरफ से एक पत्र दिया। उसका आशय यह

था कि मैं चाहे जिस समय चाहे जहाँ जाऊँ, पुलिस को उसमें दखल नहीं देना चाहिये। मैं इस पत्र को हमेशा अपने साथ रखकर घूमने निकलता था। कभी उसका उपयोग नहीं करना पड़ा। लेकिन इसे तो केवल संयोग ही समझना चाहिये।

डॉ. क्राउजेने मुझे अपने घर आने का निमंत्रण दिया। मैं यह कह सकता हूँ कि हमारे बीच मित्रता हो गयी थी। मैं कभी-कभी उनके यहाँ जाने लगा। उनके द्वारा उनके अधिक प्रसिद्ध भाई के साथ मेरी पहचान हुई। वे जोहानिस्बर्ग में पब्लिक प्रोसिक्यूटर नियुक्त हुए थे। उन पर बोअरयुद्ध के समय अंग्रेज अधिकारी का खून कराने का षड़यंत्र रचने के लिए मुकदमा भी चला था और उन्हें सात साल के कारावास की सजा मिली थी। बेंचरों ने उनकी सनद भी छीन ली थी। लड़ाई समाप्त होने पर डॉ. क्राउज़े जेल से छूटे, सम्मानपूर्वक ट्रान्सवाल की अदालत में फिर से प्रविष्ट हुए और अपने धन्धे से लगे। बाद में ये संबंध मेरे लिए सार्वजनिक कार्यों में उपयोगी सिद्ध हुए थे और मेरे कई सार्वजनिक काम उनके कारण आसान हो गये थे।

पटरी पर चलने का प्रश्न मेरे लिए कुछ गंभीर परिणामवाला सिद्ध हुआ। मैं हमेशा प्रेसिडेण्ड स्ट्रीट के रास्ते एक खुले मैदान में घूमने जाया करता था। इस मुहल्ले में प्रेसिडेण्ट क्रुगर का घर था। यह घर सब तरह के आडंबरों से रहित था। इसके चारों और कोई अहाता भी नहीं था। आस-पास के दूसरे घरों में और इसमें कोई फरक नहीं मालूम होता था। प्रिटोरिया में कई लखपतियों के घर इसकी तुलना में बहुत बड़े, शानदार और अहातेवाले थे। प्रेसिडेण्ट की सादगी प्रसिद्ध थी। घर के सामने पहरा देनेवाले संतरी को देखकर ही पता चलता था कि यह किसी अधिकारी का घर है। मैं प्राय: हमेशा ही इस सिपाई के बिलकुल पास से होकर निकलता था, पर वह मुझे कुछ नहीं कहता था। सिपाही समय-समय पर बदला करते थे। एक बार एक सिपाहीने बिना चेताये, बिना पटरी पर से उतर जाने को कहे, मुझे धक्का मारा, लात मारी और नीचे उतार दिया। मैं तो गहरे सोच में पड़ गया। लात मारने का कारण पूछने से पहले ही मि. कोट्सने जो उसी समय घोड़े पर सवार होकर उधर से गुजर रहे थे, मुझे पुकारा और कहा:

''गाँधी, मैंने सब देखा है। आप मुकदमा चलाना चाहें तो मैं गवाही दूँगा। मुझे इस बात का बहुत खेद है कि आप पर इस तरह हमला किया गया।''

मैंने कहा: ''इसमें खेद का कोई कारण नहीं। सिपाही बेचारा क्या जाने? उसके लिए तो काले-काले सब एक से ही हैं। वह हब्शियों को इसी तरह पटरी पर से उतारता होगा। इसलिए उसने मुझे भी धक्का मारा। मैंने तो नियम ही बना लिया है कि मुझ पर जो बीतेगी, उसके लिए मैं कभी अदालत में नहीं जाऊँगा। इसलिए मुझे मुकदमा नहीं चलाना है।''

''यह तो आपने अपने स्वभाव के अनुरूप ही बात कही है। पर आप इस पर फिर से सोचिये। ऐसे आदमी को कुछ सबक तो देना ही चाहिये।''

इतना कहकर उन्होंने उस सिपाही से बात की और उसे उलाहना दिया। मैं सारी बात तो समझ नहीं सका। सिपाई डच था और उसके सात उनकी बातें डच भाषा में हुई। सिपाहीने मुझ से माफी माँगी। मैं तो उसे पहले ही माफ कर चुका था।

लेकिन उस दिन से मैंने वह रास्ता छोड़ दिया। दूसरे सिपाहियों को इस घटना का क्या पता होगा? मैं खुद होकर फिर लात किसलिए खाऊँ? इसलिए मैंने घूमने जाने के लिए दूसरा रास्ता पसन्द कर लिया।

इस घटना ने प्रवासी भारतीयों के प्रति मेरी भावना को अधिक तीव्र बना दिया। इन कायदों के बारे में ब्रिटिश एजेण्ट से चर्चा करके प्रसंग आने पर इसके लिए एक 'टेस्ट' केस चलाने की बात मैंने हिन्दुस्तानियों से की।

इस तरह मैंने हिन्दुस्तानियों की दुर्दशा का ज्ञान पढ़कर, सुनकर और अनुभव करके प्राप्त किया। मैंने देखा कि स्वाभिमान की रक्षा चाहनेवाले हिन्दुस्तानियों के लिए दक्षिण अफ्रीका का उपयुक्त देश नहीं है। यह स्थिति किस तरह बदली जा सकती है, इसके विचार में मेरा मन अधिकाधिक व्यस्त रहने लगा। किन्तु अभी मेरा मुख्य धर्म तो दादा अब्दुल्ला के मुकदमें को ही सम्भालने का था।

–'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार,
पृष्ठ क्र.११६-११९, क्रमश:

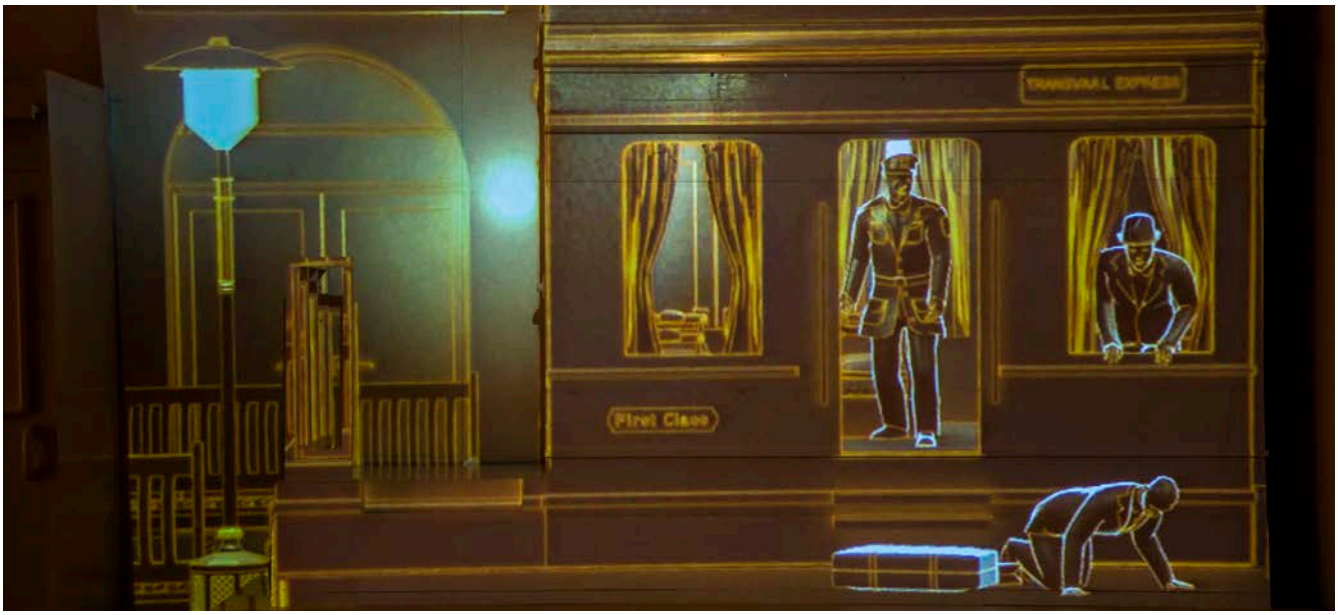

दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी के अपमानित किए जाने की घटना थ्रीडी एनिमेशन में, गाँधी तीर्थ संग्रहालय से

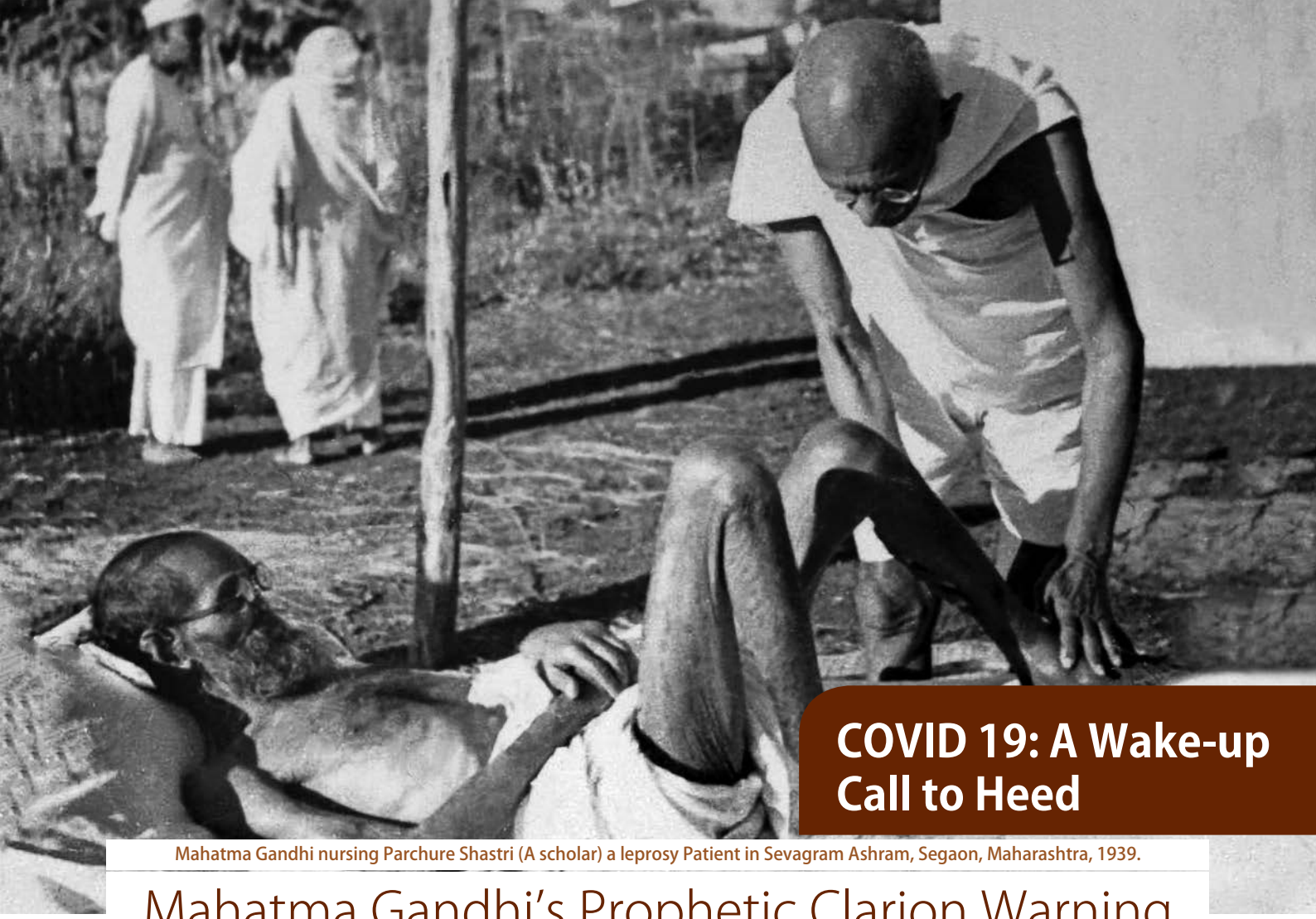

COVID 19: A Wake-up Call to Heed

Mahatma Gandhi nursing Parchure Shastri (A scholar) a leprosy Patient in Sevagram Ashram, Segaon, Maharashtra, 1939.

Mahatma Gandhi's Prophetic Clarion Warning

COVID 19 is a wake-up call for the postmodern world! In line with the adage "every problem is an opportunity in disguise", the present dramatic scenario of pandemic proportions spotlights the relevance of Mahatma Gandhi's clarion call (articulated in his incendiary manifesto Hind Swaraj [1909]) to extricate ourselves from the mesmerisation of modernity. Considered by him at best as a "nine days' wonder", he even went as far as to discredit modernity's alleged civilizational status as a "disease" to which we must endeavour not to fall victim. Whether this can be deemed an illustration of prophetic prescience or not, in any case, Gandhiji's vituperative phraseology (admittedly constituting part of a polemical diatribe with the aim of subverting the legitimacy of the colonial enterprise, epitomized by his stringent criticism of the Indian railways,[1] law courts, modern medicine and English education) embodies for us today an uncanny significance in these cataclysmic times as the virus spreads exponentially and the death toll is on the rise.

Modernity itself seems to be in a state of siege – especially in the western hemisphere, as transatlantic flights to the US are suspended; European nation-state borders sealed; international stock markets are plummeting making a global recession loom large; home office, self-isolation and quarantine are becoming the 'new speak' as economic, social, educational and cultural life is being impacted. As for politicians, struggling - they are at a loss to find a global approach and are compelled to undergo a slow awakening to the gravity of the pandemic.

With modernity's shining gloss getting unmasked as a deceptive mirage, it is dawning on us that our modern globalized life-style has made us weaker than ever[2]: admittedly, free trade, cheaper flights and social media have brought us closer together than ever, but they are also making us more vulnerable than ever. What is more, mass hysteria is on the rise as through social media platforms rumours and fake news are spreading faster than the virus. And yet, the primary victims are the 'first world' including India's and the South's upwardly striving jet-setting elite who until now enjoyed the specious privilege to be living in an age of unparalleled sophistication, freedom and comfort, claiming supremacy over the natural world and mastery of science.

Yet with jeremiads blasting in the news media that we are only a step or two away from disaster, not only the hubris of postmodernity (boasting to have conquered disease, etc.) but also its scourge of criminal injustice in view of the all-pervasive glaring social and economic disparity is exposed as the killer virus[3]'s onslaught threatens the lives of unsuspecting millions living in abysmal conditions.

Confronted with this apocalyptic scenario, let us recall Gandhiji's powerful allegorical premonition which reads as follows: "When the moth approaches its doom it whirls round faster and faster till it is burnt up. It is possible that India will not be able to escape this moth-like circling. It is my duty to try, till my last breath, to save India and through it the world from such a fate."[4]

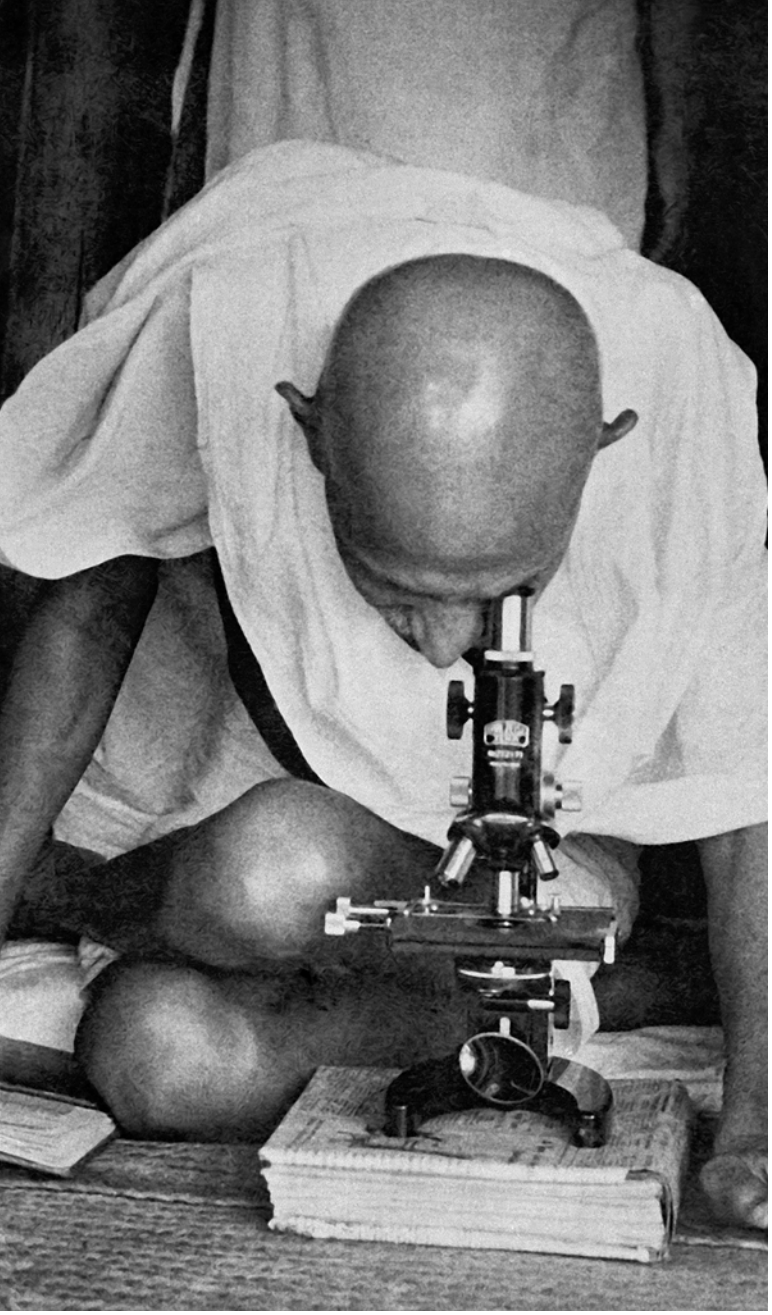

Mahatma Gandhi with the doctor studying the leprosy germs with microscope, Segaon, 1939.

Gandhiji's forebodings, though having an all-too-poignant ring, rather than deepening our despondency, should indeed summon us to urgently adopt a new mind-set: guided by his inspirational example, we are called upon to chart out a viable alternative model of polity that could extricate us from the contemporary impasse. Thereby, his envisioned road-map of integrating economics, politics and technology with ethics (all the while foregrounding *Daridranarayan's* well-being) can function as our sheet anchor in these precarious times.

And more immediately, to mitigate the rapid spread of the virus, for which – ironically - allopathic medicine offers no cure, we should model ourselves on Gandhiji, the indomitable experimenter in naturopathy, to use effective preventive treatment (and household remedies), practise excellent personal hygiene, promote and ensure community sanitation, and restrict ourselves to our localities, avoiding long-distant travel and reducing attendance at public assemblies: in short, the Gandhian principles of *swadeshi, swachchhata* and *sarvodaya* should be our guidelines. Indeed in following his dictum "Be the change you want to see in the world", through "simple living and high thinking" each and every one of us can make our contribution towards redeeming humanity and Planet Earth and thereby pay homage to the Mahatma in his 150th birth anniversary.

References

1) Notably, he underscored the fact that railways were carriers and spreaders of epidemic diseases;

2) We should recall Gandhiji's warning in Hind Swaraj that through modernity humanity was becoming morally and physically weaker;

3) COVID 19 is now scientifically proven to have originated in Wuhan through breeding wild animals (in particular exotic varieties such as bats and pangolins) in captivity, for instance in so-called wet markets, for commercial purposes and intended for human consumption, thus creating ideal conditions for the spill-over of pathogens from one species to another, including to humans;

4) Extract from Mahatma Gandhi's letter to Jawaharlal Nehru, dated 5th October, 1945

- Prof. Gita Dharampal,
Dean of Research, Gandhi Research Foundation

◆◆◆

कस्तूरबा गाँधी

जो चिज मुझे अंतःकरण से सच्ची लगती है वह मैं हमेंशा सभी को कहता रहता हूँ। कस्तूरबा ने सत्याग्रह में अपनी भूमिका निभाई उससे पहले उन्होंने गाँधीजी के साथ बात की थी वह मार्मिक हास्य के रूप में हुई थी पर इसके गांभीर्यता के संदर्भ में हृदय को पिघला देनेवाला संवाद पूर्ण सत्याग्रह की लडत में और कोई नहीं हुआ। हिंदु मुसलमान शादी को गैर कानूनी ठहराया गया यह निर्णय दक्षिण अफ्रीका की अदालत के द्वारा दिया गया। इस घटना पर कस्तूरबा ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया। गाँधीजी को पता था कि यह लडत में महिलाओं के लिए बहुत कठिन साबित होगी। गाँधीजी ने समजाने का प्रयत्न किया फिर भी वे निर्भय महिलाएं लडत में कुद गई।

मुंबई टाउन हॉल में सन १९१३ में फिरोजशाह मेहता अपने भाषण में कहते हैं कि – इतिहास में कई वीरांगनाओं के वीर कार्यों का जिक्र किया गया है। मुझे लगता हैं कि श्रीमती गाँधी सारे विश्व में सबसे बडी विरांगनाओं के रूप में इतिहास में स्थान प्राप्त करेंगी।

नमक सत्याग्रह के दौरान महात्मा गाँधी तथा अन्य सत्याग्रही, सूरत, अप्रैल २,१९३०

ऐतिहासिक दांडी यात्रा के ९० साल पूर्ण

गाँधीजी ने अपने जीवन के दौरान कई सत्याग्रह किए हैं, पर उनमें नमक सत्याग्रह अपनी अनोखी छाप छोडता है। केवल ७८ लोगों ने मिलकर किया यह कारनामा आज भी विश्व के बड़े १० सत्याग्रह में नमक सत्याग्रह को सम्मिलित करता है। २०२० में नमक सत्याग्रह के नब्बे साल पूर्ण हुए है। इस अवसर पर अश्विन झाला के द्वारा दिए गया भाषण में से कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

एक ऐसे व्यक्ति जो सात दशक पहले चला गया है, आज भी उनके जीवन कथन को याद करते हैं विश्व उनको याद करता हैं। क्योंकि उन्होंने एक ऐसी पद्धति दी है जो मानव इतिहास में मानव को उन्नति की ओर ले जाती हैं। एक ऐसी पद्धति जो मानव इतिहास में मानव ने यह पहली बार सुना की क्या अहिंसा के आधार पर युद्ध जिता जा सकता है? हाँ, जीता जा सकती है यह साबित करने वाला व्यक्ति सात दशक पहले चला गया, किंतु विचार आज भी प्रासंगिक है। जैसे काका साहब कालेलकर ने कहा कि आने वाले हजार साल गाँधी युग से जाने जाएंगे। हिंसक पद्धति क्यों शाश्वत नहीं है? क्योंकि उनमें हारने वाला भी रोता है और जीतने वाला भी रोता है, क्योंकि कई अपने को गवाएं होते हैं। और हिंसक पद्धति में आने वाले युद्ध के बीज भी बोए जाते हैं। ऐसा नहीं कि एक बार युद्ध हो गया तो फिर नहीं होगा, क्योंकि बदले की भावना उनमें कभी खत्म नहीं होती।

ऐसी हिंसक पद्धति हमारे लिए सर्वनाश करने वाली रहती है। ऐसी हिंसक पद्धति के खिलाफ आवाज़ उठाने वाली अमोघ शक्ति का नाम ही सत्याग्रह है। गाँधीजी ने अपने जीवन के दौरान सत्य और अहिंसा के तत्वों के आधार पर निर्मित तत्व मतलब सत्याग्रह और यही सत्याग्रह गाँधीजी के जीवन का केंद्र बना। अपने जीवन के दौरान उन्होंने कई सत्याग्रह किए किंतु उनमें एक सत्याग्रह विशेष उभरकर सामने आता है, वह है नमक सत्याग्रह। आज से करीब नब्बे साल पहले किया हुआ सत्याग्रह आज भी विश्व के बड़े दस सत्याग्रह में सम्मिलित है। नमक सत्याग्रह हिंदुस्तान की आजादी का प्रवेश द्वारा बना। १९२९ में लाहोर काँग्रेस में पूर्ण स्वराज की घोषणा के बाद देश में एक बिजली सी फैल गई थी। देश के कई भागों में लोगों में विश्वास आ गया था कि अब तो स्वतंत्रता प्राप्त हो ही जाएगी। कुछ महीनों बाद रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधीजी को लिखा की महात्मा आपने देश को कुछ देने का वादा किया है। राष्ट्र मिट लगाए आपकी ओर देख रहा है, क्या आपके पास कुछ योजना है? तब गाँधीजी ने कहा कि इस अंधकार भरे वातावरण में कोई आशा की किरण नहीं दिखाई दे रही है। किंतु जब मुझे अंतरात्मा की आवाज़ सुनाई देगी मैं निश्चित ही राष्ट्र के साथ साझा करूंगा। और १८ जनवरी के दिन वे कहते हैं की मुझे दैवीशक्ती का आभास हुआ है और मैंने अपनी अंतःकरण की आवज सुनी है, वो आवाज है नमक! पहलीबार नमक को लेकर कोई आंदोलन करने की एक संकल्पना गाँधीजी के दिमाग मे आई। जब काँग्रेस कमिटी के सामने उन्होंने ये बात रखी तब कई लोगों ने आलोचना कि, की आपतो पुर्ण स्वराज्य की बात कर रहे थे, और अभी आप कह रहे हैं की नमक को लेकर आंदोलन करेंगे! इनमें ज्यादा कुछ संभावना नहीं हैं। यहाँ तक की गाँधीजी के नजदिक के लोगों ने भी इस विषय पर

महात्मा गाँधी प्राकृतिक नमक को मुट्ठी में उठाकर नमक कानून का उल्लंघन करते हुए, भीमराड, सूरत, अप्रैल ९, १९३०

ज्यादा रूची नहीं दिखाई। यहाँ तक की सरदार वल्लभभाई पटेल, नेहरू इन सभी ने मिटींग में आने से मना कर दिया की हम नहीं आएंगे। ये बात को लेकर आजादी हासिल नहीं की जा सकती। और यहाँ तक की इरविन ने तो यह कह दिया की हिंदुस्तान में गाँधी ने जो दांडीयात्रा घोषित कर दी है उससे मेरी निंद भी खराब नहीं होगी। उसे ज्यादा कुछ हासिल होनेवाला नहीं है। और एक बुजूर्ग व्यक्ती जिसकी उम्र ६१ साल की है वे लंबी यात्रा पर जाए और सफल करें ये ब्रिटीश सल्तनत में तो हरगीज नहीं हो सकता। इसिलिए यह यात्रा किसी भी रुप मे सार्थक होने वाली नहीं है। इतनी आलोचना के बीच गाँधीजी अपने मनोबल को मजबूत करते हैं। गाँधीजी की एक खासीयत यह थी कि वे सभी कार्य को पारदर्शक रूप से करते थे। उन्होंने लॉर्ड इरविन को एक खत लिखा, की मैं अहिंसा में पुर्ण श्रद्धा रखता हूँ। मैं जिस ब्रिटीशराज को एक बला मानता हूँ, पर मैं ये भी मानता हूँ की उनमें जो अंग्रेज है उनके प्रती किसी भी तरह की दुष्टता मेरे मन में नहीं है, मैं उनको स्नेहभाव से देखता हूँ। फिर भी मैं आपको यह कहना चाहता हूँ की ये ब्रिटीशराज हिंदुस्तान के लिए खतरारुप है, शोषण करनेवाली है, क्योंकि आप २१ हजार रूपए तन्खा प्राप्त करते हैं, वह एक साधारण भारतीय की तन्खा से पाँच हजार गुनी अधिक है। उसके बावजूद भी आप बडे बडे कर लादकर हिंसा का वातवरण निर्माण करते हैं। हम इस स्थिती को बर्दाश नहीं करेंगे। अगर आप हमारी माँग को स्वीकृत करते हैं तो मैं सुलह करने के लिए तैयार हूँ। अन्यथा मैं मजबूरन इस यात्रा को आगे बढाऊंगा। इसके बावजूद भी इरवीन के ऑफीस से कुछ ठीक प्रत्युत्तर नहीं आया। मजबूरन १२ मार्च को यात्रा का आरंभ करने की घोषणा निश्चित हुई। ११ मार्च की रात काफी रोचक थी, इसीलिए की करीब दस हजार से ज्यादा लोग आश्रम के इर्दगीर्द जमा हुए थे। कहीं भजन गाये जा रहे थे, कहीं गीत गाये जा रहे थे। सभी लोग बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। गाँधीजी को गिरफ्तार करेंगे या नहीं? कोई कहता था की बड़ी सी गाडी आ रही है बापू को गिरफ्तार करने के लिए। दुसरे कहते थे की नहीं नहीं ऐसा नहीं है वो आधी रात को आनेवाली है और वेश बदलकर आनेवाली है। ऐसी कई तरह की अफवाएं फैल रही थी। उस रात एक ही व्यक्ती चैन की नींद सोया था और वो थे गाँधीजी। १२ मार्च के दिन हमेशा की तरह गाँधीजी चार बजे उठे नित्यकर्म किया, छः बजे प्रार्थना हुई, साढ़े छः बजे यात्रा के प्रस्थान के लिए काकासाहेब कालेलकर ने गाँधीजी के हाथ में लाठी थमाई, चप्पल पहने, कस्तुरबा ने तिलक लगाया। उस दौरान एक रोचक घटना ये भी घटी की गाँधीजी के दुसरे बेटे मणिलाल उनकी पत्नी रो रही थी। तब कस्तुरबा ने कहा की क्या इन आँसूओं से भरे चेहरे के साथ इन योद्धाओं को विदा करोगी? ये योद्धाएं हैं और हम उन योद्धायों की अर्धांगीनी है, अगर हम मजबूत होंगे तो वे भी मजबूत होंगे। ७८ सत्याग्रहियों का वह दल कतार में खडा हो गया। कतार में खडे सत्याग्रही भारत के १६ प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उनमें किसी ने लुंगी पहनी थी, तो कोई लंगोट पहने हुए थे, किसी ने पायजामा पहना था। किसी का कुर्ता छोटा था, किसी का बडा था, किसी ने चप्पल पहने थे, किसीने जुते पहने थे तो कोई तो नंगे पैर भी था। इतनी विविधता में एक समानता यह थी कि वे सब खादीधारी थे। गाँधीजी ने कदम बढाए। यह कहना मुश्किल होगा की पहले दायां कदम बढाया होगा की बाया, पर जो भी कदम बढाया वह ब्रिटिश सल्तनत की नींव को हिलानेवाला कदम बना। वह कदम भारत की स्वतंत्र संग्राम में मील का पत्थर बना।

यात्रा के आगे एक नौजवान की टीम जाती थी वे लोग गाँव का सर्वे करते थे। गाँव में कितने पुरुष, कितनी महिलाएं और कितने बच्चे है? शिक्षा की स्थिती क्या है? गाँव में कितने पशू है? गाँव मे नमक की आवश्यकता कितनी है? स्वच्छता के संदर्भ मे क्या नियोजन है? खादी कितने लोग पहनते है? चरखे कितने चलते हैं? इस तरह का एक सर्वे करते थे। और जब गाँधीजी उस गाँव में पहूँचते थे तब उनका भाषण उस सर्वे से प्राप्त जानकारी के आधारपर रहता था। १२ मार्च से ५ एप्रिल तक चली इस यात्रा के दौरान गाँधीजी ने करीब करीब ११ नदीयों को पार किया, ५० खत लिखे, ४६ भाषण दिए, ६ संदेश दिए। ७८ लोगों का वो कारवाँ चला था अहमदाबाद से ५ एप्रिल दांडी पहुंचते पहुंचते लाखों लोगों मे तबदिल हो गया था। ५ एप्रिल के दिन वे जब दांडी पहूँचे तब सैयदना साहब ने गाँधीजी का स्वागत किया और कहा की बापू आप मेरे सैफी विला में ठहरीए। गाँधीजी ने कहा आप मुझे आमंत्रित तो कर रहे हैं पर आप कभी अपनी हवेली से हाथ धो बैठोगे, आप उसे गवा देंगे। तब शैयदना साहब ने कहा मेरी तैयारी है। और हुआ भी यूँ, जब दांडी के पचास साल हो गए तब दांडी स्मारक को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया, उसके साथ सैफी विला को भी राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया गया। उनकी मालकी भी सैयदना साहब के पास से चली गयी। सैयदना साहब ने उस वक्त कहा की गाँधी जो कहते थे वह सही साबित हुआ।

५ अप्रैल को उनके एक सत्याग्रही ने कहा मेरा एक मित्र अमेरिका में रहता है उनके लिए आप कुछ संदेश देना चाहेंगे? तब गाँधीजी ने लिखा I want world sympathy in this bettle of right againist might. ६ एप्रिल की सुबह साढ़े छः बजे समुद्र में स्नान कर गाँधीजीी ने जब मिट्टीयुक्त नमक उठाया तब एक गगनभेदी आवाज आई नमक का कानून तोड दिया'। वो गगनभेदी आवाज दांडी तक सीमित नहीं थी। सारे विश्व में फैल गई थी। बापू के संदेश को लोगों ने जीवंत कर दिया और जगह जगह पर नमक बनाने लगे, कई

नमक सत्याग्रह के दौरान समुद्र किनारे चलती हुई महिलाएँ, अप्रैल १९३०

प्रदेश में सत्याग्रह शुरू हो गए थे। लोगों में जैसे एक योद्धत्व वीरत्व आ जाता है वैसे वीरत्व की भांती लोग नमक बनाने के लिए निकल जाते थे। उस दौरान भारत में करीब पांच हजार जगह पर सत्याग्रह हुए। एक चुटकी भर नमक के आधार पर उन्होंने साम्राज्य की नींव को हिला दिया। ६ अप्रैल के दिन गाँधीजी के द्वारा उठाया गया मिट्टीयुक्त नमक की निलामी की गई वह नमक १६०० रुपये में बिका। यह सभी रुपए आश्रम फंड में उन्होंने सौंप दिए। यात्रा के दौरान करीब २५ हजार रुपये उन्होंने प्राप्त किये थे।

गाँधीजी द्वारा आरंभ किया यह आंदोलन सफल हो चुका था। जो पहले इस आंदोलन का विरोध कर रहे थे, या नमक को लेकर गाँधीजी के साथ सहमत नहीं थे, गाँधीजी के दांडी पहुँचने पर आंदोलन की तीव्रता ने उन सभी को प्रत्युत्तर दे दिया था। जो विरोध कर रहे थे उन्हीं लोगों ने इस आंदोलन की सराहना की।

नमक सत्याग्रह आरंभ के समय वाइसराय लार्ड इरविन ने व्यंगपूर्ण रूप से कहा था कि चुटकीभर नमक से अंग्रेजी शासन हिलाने की यह एक विभ्रांत योजना है। तथापि इसी दांडी यात्रा ने उस लक्ष्य की पूरी उपलब्धि कर दिखाई। जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि हमें इस आदमी की दक्षता पर आश्चर्य हुआ। और आगे वे कहते हैं कि अपने जादुई स्पर्श से आपने नया भारत निर्माण किया है, इस महान उपलब्धि पर मैं आपका अभिनंदन करता हूँ। भविष्य में क्या होगा यह तो मैं नहीं जानता, मगर भूतकाल ने (दांडी यात्रा) हमारा जीवन इतना समृद्ध कर दिया है कि, हमारे साधारण से नीरस जीवन को महाकाव्य सी महानता प्राप्त हो गई। मोतीलाल नेहरू ने कहा कि गाँधीजी सचमुच जादूगर हैं। हमारी समझ में नहीं आ रहा था, मगर उन्होंने हमारे सबके दिमागों पर कब्जा कर लिया।

दांडी यात्रा सफल रही या नहीं यह तो स्पष्ट दिख ही रहा है, फिर भी अगर उनका मुल्यांकन करना है तो उस यात्रा के बाद देश में चरखे चलाने की संख्या बढ गई, खादी पहनने की संख्या बढ गई, रचनात्मक कार्य करनेवाले लोगों की संख्या बढ गई। कई गाँव ऐसे थे जो स्वावलंबन के आधारपर अपनी गतिविधियों को आगे बढाने लगे। १९४२ का भारत छोड़ो आंदोलन में अहिंसक तत्व के आधारपर सफल हुआ उनका पूर्ण श्रेय दांडी सत्याग्रह को जाता है।

अंत में अगर हम कह सके की १५ अगस्त १९४७ के दिन भारत को आजादी हासील हुई, उसकी नींव अगर कहीं दिखाई देती है तो वह १२ मार्च १९३० है, इसीलिए आज भी युवाओं को गाँधी प्रेरित करता है। सत्ता के विरूद्ध संघर्ष और अधिकार की लड़ाई में गाँधी आज भी प्रेरणा स्थान है।

–अश्विन झाला,
संपादक, खोज गाँधीजी की

गाँधीजी के द्वारा नमक का कानून तोड़ने के बाद पूरे देश में जगह–जगह पर लोगों ने नमक बनाया, अप्रैल १९३०।

गाँधी तीर्थ से...

हमारा परिवार और गाँधी विचारों का अधिष्ठान

अशोक भवरलाल जैन, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक तथा जैन इरिगेशन सिस्टम्स ली. के अध्यक्ष हैं। अपने पिता के संस्कारों का अद्भुत प्रभाव आप पर पड़ा है। उन्हीं की तरह आप भी अत्यंत सहृदयी हैं। उनकी अंगुली पकड़ कर आपने समाज सेवा और व्यापार की ए.बी.सी.डी. सीखी हैं। आप प्रदेश एवं राष्ट्र स्तर की अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। गाँधी रिसर्च फाऊंडेशन की जिम्मेदारी भी आपके पिताजी ने आपके कंधों पर रखी हैं। जिसे आप बखूबी निभा रहे हैं। गाँधी तीर्थ के निर्माण में आपके सहयोग और योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। गाँधी विचार की धरोहर के लिए आप और आपका परिवार कटिबद्ध है। इस संदर्भ में आपके द्वारा लिखा यह लेख हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

–संपादक

आदरणीय बड़े भाऊ ने आज तक जो भी कार्य अपने हाथ में लिया, उसे विधिपूर्वक संपन्न किया। अपनी माताजी से प्राप्त प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के विचारों का शब्दशः पालन करने के लिए रात–दिन मेहनत किया। अपनी दूरदृष्टि से अपने कार्यों को विश्व कल्याण से जोड़ा। इसलिए जैन इरिगेशन की स्थापना के पीछे केवल आर्थिक लाभ लेने की मंशा नहीं थी। अपने परिवार के भरण–पोषण के साथ किसानों को भी जीवन यापन के साधन मिले, इसका प्रयत्न किया गया। पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े और वृक्षों के संरक्षण और संवर्धन संबंधित अपनी माताजी के विचारों को अपने वास्तविक जीवन में उतारा। इसके कारण जगत् में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी। अपनी माताजी के दिए गए विचारों का अनुपालन करते हुए भगवान् महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह, शांति के साथ उन्हें समृद्धि भी मिली। इस प्रकार बचपन में ही उनके अंदर गाँधी विचारों का बीजारोपण हुआ। पड़ोसी धर्म और मानवता आदि के संस्कार भी उन्हें उसी समय मिले। इन विचारों पर दृढ़तापूर्वक अमल करने के कारण जैसे–जैसे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई, उन्होंने अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना शुरू कर दिया। महात्मा गाँधी के दर्शनों को अंगीकार कर अपने जीवन की यात्रा शुरू की। जीवन भर इस निर्धार को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के माध्यम से उन्होंने एक दिशा देने का प्रयत्न किया है। फाउण्डेशन के बारे में अभी सोचा और अभी काम शुरू किया, ऐसा नहीं है। पूरे जीवन भर का चिंतन उन्होंने इसमें निचोड़ दिया है। इस चिंतन और निर्धार को कृति से जोड़ कर किया हुआ प्रयास अर्थात् गाँधी तीर्थ। दुनिया भर के वरिष्ठ गाँधीजनों ने इस कार्य के लिए आगे आकर सहयोग दिया, इसीलिए भाऊ का यह सपना वास्तव में साकार हुआ।

भाऊ के विचारों के संस्कार बचपन से हम पर होते आए हैं। मेरे जन्म से पहले उन्होंने जो कार्य किया, उसके बारे में अलग–अलग सहयोगियों से चर्चाएं होती रहती थीं। इन चर्चाओं से भाऊ के बारे में शुरुआती के दिन बार–बार उन्होंने किये हुए कामों की जानकारी, आह्वानों की जानकारी तथा मूल्यों से कोई समझौता न करने के बारे में जानकारी मिलती थी। इसी से हमारी एक वैचारिक नींव तैयार हुई। गाँधीजी के जीवन मूल्य तथा तत्त्व ज्ञान हमें भी प्रेरित करने लगे। इस बारे में भाऊ से हमें कोई सूचनाएँ नहीं मिलती थी। लेकिन उन्होंने उनके संस्कारों की धरोहर, उनके आचरणों से हमें मिली। गाँधीजी के जीवन और विचारों के अधिष्ठान का ब्योरा हमारी पीढ़ी तक भाऊ के कारण पहुँचा।

भाऊ ने साधारणतः १९६३ से व्यवसाय की शुरुआत की। ग्रामीण इलाके की संवेदना, वहाँ की खेती, उनकी जीवन शैली, यह सब उन्होंने बहुत ही नजदीक से अनुभव किया। इसीलिए उन्होंने अपने व्यवसाय को कृषि क्षेत्र की ओर मोड़ा। उसके साथ गाँधीजी के विचारों का प्रभाव उन पर था। इसलिए उनके कार्यशैली में या हाथ में लिए हुए किसी भी कार्य में गाँधी विचारों का

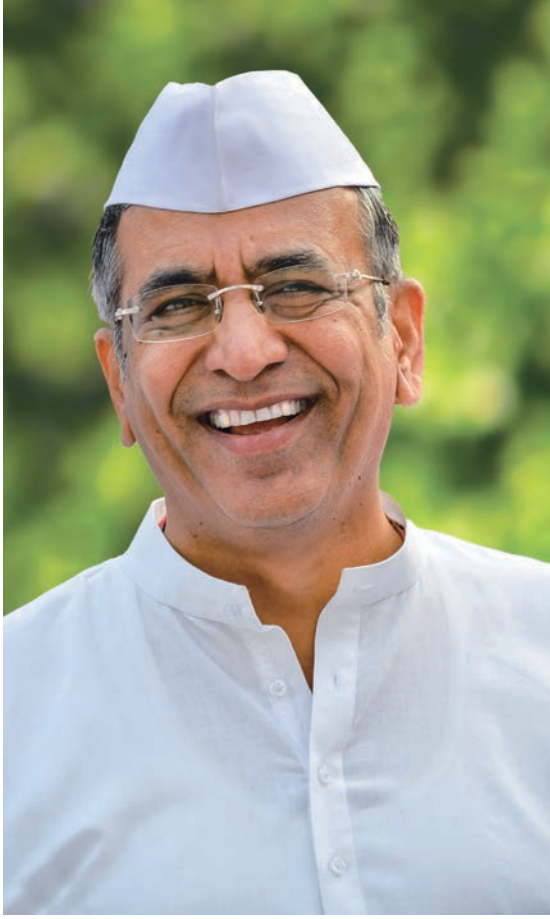

अशोक जैन

प्रतिबिम्ब आरंभ से ही दिखाई पड़ता है। १९६३ के दशक में देश में और भी बहुत सारे उद्योगपति थे। लेकिन कुछ चुनिंदा घरानों में ही गाँधी विचारों के बारे में आस्था थी। यह मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ। इस स्थिति में हमारे परिवार में गाँधी विचारों के बारे में जो आस्था थी, उसे कृतित्व से भाऊ ने जोड़ दिया। इसलिए हम निश्चित रूप से खुद को भाग्यशाली समझते हैं, वैसे भाऊ ने व्यवसाय की शुरुआत केरोसिन की एजेन्सी के माध्यम से की। उस समय केरोसिन की बड़े पैमाने पर कमी महसूस होती थी और कालाबाजारी भी होती थी। ऐसे में सरकार ने भी कीमतें बढ़ा दी। फिर भी भाऊ ने केरोसिन का उपलब्ध स्टाक पुरानी कीमत पर ही बेचा। नैतिकता से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया।

गाँधी विचारों की जो छाप हमारे पिताजी पर है, वह आनुवंशिकता के कारण हममें भी दिखाई दे रही है। १९८५ में हमें पी.वी.सी. पाईप बनाने के लिए जो कच्चा माल चाहिए, अर्थात् रिजिन चाहिए, वह बनाने का कारखाना लगाना था। लाइसेंस का राज था। इसलिए लाइसेंस की जरूरत थी। जलगाँव से दिल्ली तक हमारी फाइल गई। प्रोजेक्ट मंजूर हो गया। अंतिम हस्ताक्षर के लिए वह फाइल केन्द्रीय मंत्री की टेबल पर गई। उन्होंने पिताजी को चर्चा के लिए बुलाया। चर्चा हो गई, लेकिन मंजूरी के लिए उन्होंने ५ करोड़ रुपये की माँग की। पिताजी ने

उन्हें कहा कि मैं गुणवत्ता के आधार पर यहाँ तक पहुँचा हूँ। इसी गुणवत्ता पर अगर आप लाइसेंस देंगे तो मैं लूँगा। उसके लिए एक रुपया भी मैं नहीं दूँगा। परिणाम स्वरूप हमें लाइसेंस नहीं मिला। हमारे प्रतिस्पर्धी को पंद्रह दिनों में हमारे ही फाइल का एक कागज बदल कर लाइसेंस दे दिया गया। अगर उस दिन पिताजी पाँच करोड़ दे देते, तो आज हमारा उद्योग समूह बहुत आगे जा सकता था। आज जिस स्थिति पर है उसके बावजूद समाज के लिए जो कुछ हम कार्य करते हैं, उसमें आत्मिक सम्मान है। क्योंकि यह पैसा कष्ट का है। गलत रास्ते से इकट्ठा किया हुआ यह पैसा नहीं है। आज भी करोड़ों रुपयों के प्रकल्पों के लिए मौका आता है। उसमें पैसे बाँटने का भी विषय आता है। लेकिन हमारे वैचारिक परिप्रेक्ष्य में यह विषय नहीं बैठता। यह सब हम पिताजी के सख्ती के कारण नहीं करते हैं। हमें भी उस तरह काम करने की इच्छा है। भविष्य में भी इसी रास्ते पर हम चलेंगे, क्योंकि यह संस्कारों की ताकत है। आने वाली पीढ़ियों पर उसका असर पड़ रहा है। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। गाँधी तीर्थ केवल वास्तु का निर्माण नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक तीर्थ बन रहा है।

आज तक हमने हाथ में लिए हुए विविध उपक्रम तथा सामाजिक कार्य, आगे ले जाने के लिए गाँधीजी के विचार किस तरह असरदार होंगे, इसके लिए हम प्रयत्नरत हैं। भाऊ के मार्गदर्शन से यह सब काम शुरू है। अगली पीढ़ी को मार्गदर्शन करने की तथा अगली पीढ़ी की मानसिकता बदलने की क्षमता, इस काम में है। इस विश्वास से इस उपक्रम को दिशा देने का निर्णय उन्होंने लिया है। हमारे बच्चों में भी यानि तीसरी पीढ़ी में भी इन विचारों का प्रतिबिम्ब आपको दिखाई दे रहा है।

मैंने इस बारे में सहज रूप से सोचा है कि अगर गाँधीजी के विचारों को युवकों तक ले जाना है, तो उन्हें शालेय जीवन से ही पहचान करवानी होगी। इस तरह से इस विषय पर लक्ष्य केन्द्रित कर बड़े पैमाने पर गाँधीजी के विचार भारत वर्ष में फैल सकते हैं। फाउण्डेशन के माध्यम से यह विचार तरूण तक ले जाने का प्रयास हम कर रहे हैं। जैन होने के कारण अहिंसा का धर्म हमारे खून में मोजूद है। इसलिए गाँधी विचारों को प्रत्यक्ष कृति में उतारने के लिए एक वातावरण परिवार में है। अहिंसा और अपरिग्रह की शिक्षा जो भगवान् महावीर ने समाज को दी है। वह तीन हजार साल पहले की है। और यही संस्कार गाँधीजी ने सौ साल पहले समाज के सामने रखा। अहिंसा तथा सर्वधर्म का सार उन्होंने नए सिरे से लोगों के सामने रखा। फाउण्डेशन आज के युग में इन्हीं विचारों के माध्यम से लोगों तक पहुँचा रहा है।

तीसरी पीढ़ी में प्रभाव का एक उदाहरण मैं आपको देता हूँ। उस वक्त मेरा लड़का आठ साल का था। उस पर गाँधीजी का कितना प्रभाव था, इसका मैं आपको उदाहरण देता हूँ। मेरे पिताजी और वे बातें कर रहे थे। उसका यह स्वभाव है कि, वह पिताजी से बहस किया करता था। तरह-तरह के प्रश्न पूछता रहता था। इस दिन उसने कहा- दादा, बारह तारीख को आपका जन्मदिन आ रहा है। मैं आपको कुछ उपहार देने की सोच रहा हूँ। पिताजी ने कहा कि, मैं तुझसे कोई उपहार नहीं लूँगा। अन्यथा तू मुझसे उसके बदले में उपहार माँगेगा। यह संस्कृति मुझे पसंद नहीं है। मैं तुझसे उपहार नहीं लूँगा। उसने फिर कहा, दादाजी आपसे बदले में उपहार माँगना उचित नहीं है। आपने तो हमें पहले ही बहुत बड़ा उपहार दे दिया है। इस पर मेरे पिताजी को आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा कि, हमने तुझे बदले में क्या उपहार दे दिया। उसने कहा, हम बच्चों के लिए आपने अनुभूति स्कूल जो बना दिया है। इसलिए हमें बदले में कोई उपहार नहीं चाहिए। उसने फिर कहा कि, अच्छा बताइए कि, हम आपको उपहार के रूप में क्या देने वाले हैं? इसके बाद मैं किसी दूसरे काम में लग गया। दूसरे दिन वह प्रातः साढ़े पाँच बजे घूमने आया, तब उसने बताया कि, दादाजी मुझे आपको गाँधीजी का स्टैच्यू देना है। वह हर रविवार को भाऊ के साथ गाँधी तीर्थ की साइट पर जाता था। अन्य लोगों से होने वाली बातें सुनता था। उस पर गाँधी का प्रभाव इसी उम्र से शुरू हो गया था। वह जब टहल कर आया, तो मेरे पीछे पड़ गया कि, मुझे दादाजी को उनके जन्मदिन पर गाँधीजी का स्टैच्यू देना है। मुझे स्टैच्यू तैयार करवाना पड़ा। उसने वह स्टैच्यू उनके जन्मदिन पर उन्हें भेंट किया। हमने देखा कि, अब हमारे बच्चों यानि भाऊ की तीसरी पीढ़ी में भी गाँधी विचार उतरने लगा।

आदरणीय भाऊ ने यह विश्व खड़ा किया। इसका निर्माण करते समय मैं घर में सबसे बड़ा, इसलिए मेरे अकेले के साथ ही उन्होंने चर्चाएं की हों, ऐसा नहीं है। बल्कि हम चारो भाई इस निर्णय प्रक्रिया में सम्मिलित हैं। चारो भाइयों से चर्चा करने के बाद ही गाँधी तीर्थ के निर्माण का निर्णय हुआ था। उन्होंनें क्या करना चाहिए या नहीं करना चाहिए, यह उनका अधिकार है। इसके लिए हमें पूछने की जरूरत नहीं है। क्योंकि यह सब निर्माण जो हुआ है, उन्हीं का है। उन्होंने जो नींव रखी है, उसी के भरोसे पर हम काम कर रहे हैं। व्यवसाय के साथ-साथ एक संघ विचार प्रक्रिया का अधिष्ठान भी उन्होंने हमें प्रदान किया है।

गाँधी विचारों का तीर्थ आने वाली पीढ़ियों के लिए निर्माण हो रहा है। तीर्थों के दो प्रकार हमारे सामने आते है। उसमें एक तीर्थ है -गंगा का पवित्र जल और दूसरा है भव्य पवित्र मंदिर। लेकिन यह है गाँधी के विचारों का तीर्थ। इस तीर्थ में किसी भी धर्म के लोग आ सकते हैं। गरीब हो या अमीर हो, यहाँ कोई भेदभाव नहीं है। आदरणीय भाऊ को गाँधीजी के जीवन का तत्त्वज्ञान दुनिया भर के घर-घर में पहुँचाना है। इस कार्य को गाँधी तीर्थ के माध्यम से आगे ले जाने के लिए हमारा पूरा परिवार वचनबद्ध और कटिबद्ध है।

नेशनल गाँधीयन लीडरशिप कैंप को संबोधित करते हुए श्रीमान अशोकभाऊ

फाउण्डेशन की गतिविधियां

राजकोट स्थित आत्मीय यूनिवर्सिटी कैम्पस में गाँधी विचार संस्कार परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह से पहले सामुहिक प्रार्थना करते छात्र वृंद

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा २०१९–२०

पुरस्कार प्राप्त छात्रों के साथ आत्मीय यूनिवर्सिटी के व्यास साहब, फाउण्डेशन के भुजंगराव बोबडे तथा अश्विन झाला।

परीक्षा का उद्देश

गाँधी के विचारों ने दुनिया भर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टिकोण से भारत और दुनिया को बदलने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने समस्त जीवन में सिद्धांतों और प्रथाओं को विकसित करने पर ज़ोर दिया और साथ ही दुनिया भर में हाशिए के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज़ उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया। युद्ध और शांति, आतंकवाद, मानवाधिकार, सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक–राजनीतिक अशांति और राजनीतिक–प्रशासनिक भ्रष्टाचार से संबंधित समकालीन चुनौतियों में से कई को गाँधीवादी तरीके से हल किया जा सकता है। अतः २१वीं सदी के लोगों को अभी भी गाँधीविचार से बहुत कुछ सीखना बाकी है।

एक दृष्टि से देखा जाए तो गाँधीजी एक महान शिक्षा शास्त्री थे, उनका मानना था कि किसी देश की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक प्रगति अंततः शिक्षा पर निर्भर करती है। उनकी राय में शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य आत्म–मूल्यांकन है। उनके अनुसार, छात्रों के लिए चरित्र निर्माण सबसे महत्त्वपूर्ण है और यह उचित शिक्षा के अभाव में संभव नहीं है। गाँधीजी की शिक्षा अवधारणा को बुनियादी शिक्षा के रूप में भी जानी जाती है। उन्होंने विद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को शामिल करने पर बल दिया। गाँधीजी ने शिक्षा की अवधारणा के अच्छे चरित्र का निर्माण करना तथा आदर्श नागरिक बनाना यही उद्देश्य बताए।

जानकार मानते हैं कि गाँधीजी के विचार ऐसे समय में सबसे अधिक प्रासंगिक हैं जब लोग लालच, व्यापक हिंसा और भागदौड़ भरी जीवन–शैली के समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हों। गाँधीजी की अहिंसा और सत्याग्रह की अवधारणा की आज सबसे अधिक आवश्यकता है, क्योंकि यही वह समय है जब मात्र प्रतिशोध के नाम पर किसी की भी हत्या कर दी जाती है और अपने आलोचकों को दुश्मन से अधिक कुछ नहीं समझा जाता। यदि २१वीं सदी को परिभाषित करने में वैश्विकरण, मुक्त बाजारों,

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह के बाद की क्षण

निजीकरण और उदारीकरण जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है तो यह भी अनिवार्य है कि हिंसा, उग्रवाद, असमानता, गरीबी और विषमता जैसे शब्दों को अनदेखा न किया जाए। हिंसा, उग्रवाद, असमानता, गरीबी और विषमता आदि की उपस्थिति में भी यदि कोई गाँधीजी और उनके विचारों की प्रासंगिकता का प्रश्न करता है तो शायद गाँधीजी के विचारों को लेकर उस व्यक्ति की समझ में कोई अस्पष्टता है। लोकतंत्र में आलोचना करना सभी का अधिकार होता है, परंतु आलोचना करने से पूर्व यह भी आवश्यक है कि हम उस व्यक्ति के बारे में अच्छे से पढ़ें और तर्क के आधार पर उनके विचारों को समझे।

लाखों छात्रो तक पहुँचे गाँधी विचार

इन्हीं उद्देश को ध्यान में रखकर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव के द्वारा गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का आरंभ २००७ से किया गया है। जलगाँव जिले के मात्र ७३ स्कूल और ३८७६ छात्रों से शुरु हुआ यह विचार–संस्कार का अभियान अबतक १४१५० स्कूल, कॉलेज के २० लाख से अधिक छात्रों तक पहुँचा है। केवल वर्ष २०१९ में इस अभियान में महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगड, हरियाणा, केरला, बिहार तथा नेपाल के २७१९ स्कूल, कॉलेज से ३ लाख ७६ हजार छात्रो ने सहभाग लिया।

२६ सितम्बर २०१९ के दिन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री. अशोक गहलोत साहब की गाँधी तीर्थ के मुलाकात के दौरान परीक्षा विभाग में भी भेंट हुई। उस समय उन्होंने गाँधी विचार संस्कार परीक्षा के बारे में अच्छी तरह से जानकारी ली और इससे प्रेरित होकर उन्होंने वर्ष २०१९ के लिए पुरे राज्य में इस परीक्षा का आयोजन किया और वर्ष २०१९ में राजस्थान से १८ लाख १० हजार छात्र–छात्राएं इस परीक्षा में सम्मिलित हुए।

महाराष्ट्र में इस साल रयत शिक्षा संस्था, सातारा के ४८१ स्कूल, कॉलेज के १,४७,४०६ छात्र तथा मराठा विद्या प्रसारक समाज नासिक के १५६ स्कूल, कॉलेज के ३४,३९४ छात्र इसमें सहभागी हुए। आदिवासी विकास विभाग, महाराष्ट्र शासन, नासिक के सहयोग से अत्यल्प आर्थिक उत्पन्न वर्ग के १,०९,२७० छात्रों को नि: शुल्क रूप से परीक्षा का अध्ययन साहित्य वितरीत किया गया।

इनाम वितरण समारोह संपन्न:

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा के अंतर्गत जिला कक्षा पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों छात्रों, समन्वयक तथा शिक्षकों को पदक से सम्मानित किया जाता है। ६ जनवरी से १८ फरवरी २०२० के दौरान इस पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन महाराष्ट्र एवं गुजरात के विभिन्न भागों में किया गया। महाराष्ट्र राज्य के पुरस्कार वितरण समारोह में राज्य की विभिन्न विद्यालय तथा महाविद्यालयों ने हिस्सा लिया था। उनमें मुख्य रूप से तिलक राष्ट्रीय विद्यालय – खामगाँव, श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय – अमरावती, जी. एस. कॉलेज ऑफ कॉमर्स – नागपुर, श्री गोविंदराव मुनघाटे कॉलेज – कुरखेडा, श्री योगेश्वरी महाविद्यालय – अंबाजोगाई, राजर्षी शाहू कॉलेज – लातूर, वसंतराव ढाके महाविद्यालय– ढोकी, जि. उस्मानाबाद, मराठा विद्या प्रसारक समाज के समाजकार्य महाविद्यालय – नाशिक, महात्मा फुले महाविद्यालय – पनवेल, जि. रायगड, ब. नाथ पै विद्यालय – कुडाल, जि. सिंधुदुर्ग, डॉ. पतंगराव कदम महाविद्यालय – सांगली, अण्णासाहेब कल्याणी विद्यालय – सातारा, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय – औंध, राधाबाई काले महिला महाविद्यालय – अहमदनगर मध्यप्रदेश में श्री जैन दिवाकर महाविद्यालय – इंदौर तथा गुजरात में एकलव्य मॉडेल रेसिडेन्शियल स्कूल – खोडाद, जि. तापी, बी. एल. पटेल स्कूल – रानकुंवा जि. नवसारी, कुसुमबेन शाह विद्यालय – नानपुरा सुरत, आर. एम. डी. महिला महाविद्यालय – वालुकड, जि. भावनगर, श्री ज्ञानमंजिरी स्कुल – रालगोन, जि. भावनगर, दिपक हाइस्कूल – अमरेली तथा आत्मीय विद्यामंदिर – राजकोट में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में सहभाग छात्रों के साथ गाँधीजी के जीवन आधारित प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए फाउण्डेशन के भुजंगराव बोबडे

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में सहभागी छात्रों के प्रतिभाव

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा के दौरान मुझे गाँधी कथा किताब प्राप्त हुई। इस किताब के पठन से मुझे निर्भयता, सत्य, अहिंसा यह सभी तत्वों का हमारे जीवन में क्या जो स्थान है इसका मूल्य समझ में आया। इस परीक्षा के माध्यम से मुझे केवल एक किताब ही नहीं मिली, किंतु मेरे जीवन में बदलाव का आरंभ दिख रहा है।

राजनंदिनी पाटील,
कक्षा ८, श्री नागेश्वर हाइस्कूल, राशिवडे, जि. कोल्हापूर

••••••••

इस परीक्षा के माध्यम से पढ़ी हुई किताब मेरे जीवन के हर क्षण में मुझे प्रेरित करती रहेगी।

***संस्कृति मगदूम**, कक्षा १०*

गाँधी विचार केवल अभ्यास करने के लिए ही नहीं किंतु हमारे दैनंदिन जीवन में अत्यंत उपयोगी है। मैं फाउण्डेशन के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ की इस माध्यम से मुझे कई मूल्यों की समझ प्राप्त हुई।

***भक्ति चौगले**, कक्षा ६, श्री नागेश्वर हाइस्कूल, राशिवडे, जि. कोल्हापूर*

••••••••

इस परीक्षा के दौरान मुझे गाँधीजी द्वारा लिखित किताब आरोग्य की कुंजी प्राप्त हुई थी। मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ कि गाँधीजी के आरोग्य विषयक विचार का आचरण करने से समृद्ध व सुखद समाज विश्व का निर्माण कर सकते हैं।

***सानिका माळवदकर**, कक्षा १२, शिवानी कॉलेज, सातारा*

नाबार्ड प्रशिक्षण के दौरान

फाउण्डेशन के कार्यकर्ता का प्रशिक्षण में सहभाग

बा–बापू १५० के अंतर्गत सुनिश्चित किए गए कार्यों को अंजाम देने के लिए कार्यकर्ता निर्माण करना यह प्राथमिक शर्त है। इस सिलसिले से हमारे सभी कार्यकर्ताओं को समय–समय पर विभिन्न प्रशिक्षण में सम्मिलित करते है। हाल ही में पुना स्थित नाबार्ड तथा महाराष्ट्र सहकार विकास महामंडल द्वारा ३ से ५ मार्च २०२० तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में किसान उत्पादक मंडल स्थापित करने की निर्देशिका के अंतर्गत मंडल के लिए आवश्यक प्रशासनिक योजनाएं, मंडल का आर्थिक नियोजन, आनेवाली सामान्य मुसीबतों तथा उनके उपाय के बारे में विस्तृत रुप से बताया गया। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र राज्य से विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। फाउण्डेशन की ओर से बा–बापू १५० की टीम के युवा साथी चेतन पाटील इस कार्यक्रम में सहभागी हुए थे। चेतन ने फाउण्डेशन के द्वारा कार्यरत बा–बापू १५० की गतिविधियों को प्रस्तुत किया। पुना स्थित नाबार्ड के व्यवस्थापक श्रीमान प्रमोद पाटील, प्रशिक्षण विभाग महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्रीमान डी. एम. साबले ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित किया।

कस्तूरबा और गाँधीजी की १५०वीं जयंती पर ऐसे कार्यक्रमों के द्वारा ग्रामीण भाग में स्थित लोगों के जीवन में बदलाव की पहल करने में सुनिश्चित दिशा प्राप्त होगी।

कार्यक्रम का दृश्य, एम्फीथियेटर, गाँधी तीर्थ

गाँधी तीर्थ पर शबनम विरमानी द्वारा संत परंपरा आधारित भजनों की प्रस्तुति

२५ फरवरी २०१६ के दिन परम श्रद्धेय भवरलालजी जैन इस दुनिया से विदा हुए थे। हर साल इस दिन को स्मृति दिन के रूप में फाउण्डेशन तथा जैन परिवार मना रहा है। जैन हिल्स पर स्थित श्रद्धाधाम नामक स्मृति स्थल बड़े भाऊ को समर्पित किया है। इसी स्थल पर हर साल २५ फरवरी को बडे भाऊ की स्मृति में उषा समय पर एक भजन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस साल आयोजित स्मृति दिन पर कबीर यात्रा की शबनम विरमानी तथा उनके समूह ने संत परंपरा के तत्वों को भजन के माध्यम से प्रस्तुत किया। शबनम विरमानी तथा उनका समूह करीब एक सप्ताह तक जैन हिल्स पर ठहरा था। जैन हिल्स पर स्थित गाँधी तीर्थ से हर कोई प्रभावित व प्रेरित हो जाता है। वैसे ही शबनम जी भी प्रेरित हुई और उन्होंने एक कार्यक्रम गाँधी तीर्थ पर आयोजित करने का प्रस्ताव रखा। और यह इच्छा जताई की वे इस कार्यक्रम को जैन हिल्स पर कार्यरत किसान परिवार तथा गाँधी तीर्थ परिवार के सहकारियों के लिए प्रस्तुत करना चाहती है। दि. २८ फरवरी को आयोजित इस कार्यक्रम में शबनम जी ने गाँधी विचार आधारित तत्वों को विभिन्न संतों की वाणियों के द्वारा बेहद हृदय स्पर्शी रूप से प्रस्तुत किया। गाँधी तीर्थ के एम्फीथियेटर में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब २०० से अधिक किसान तथा गाँधी तीर्थ सहकारी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का सूत्र–संचालन फाउण्डेशन के चंद्रशेखर पाटील ने किया।

पाठकों के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत।*

– संपादक

I am grateful for the March 2020 issue of *Khoj Gandhiji ki*. It contains really inspiring write-ups and other contents. I have found particularly interesting the editorial in support of organic agriculture, Samir Banerjee's deeply dialectical piece relating to Gandhian thought and his concept of Ahimsa, Dr. D. R. Mehta's article as well as the section on the activities of GRF. I once again thank the GRF for this issue..

Y. P. Anand
New Delhi

.....

A wonderful article on Gandhian thought! I am circulating it among the members of our Gandhi Peace Foundation, Cochin for discussion. We debate every Wednesday on contemporary issues and on Fridays, we engage in re-reading Gandhi. My humble suggestion is that when we project a concept such as Ahimsa, we should cite Gandhi directly, or remarks by reputed Gandhians. This will allow us to understand the implications and portent of the concept more easily and more fully..

Navin
Gandhi peace foundation, Cochin, Kerala

Late Bhau did a great job in creating the Foundation. Credit goes to you, dear Ashokji, Dr. Sudarshanji and the GRF team that you are continuing its spirit and tradition.

I send you all my best wishes.

S. N. Subba Rao
NYP, New Delhi

.....

Thanks a lot for sending me the issue of *Khoj Gandhiji ki*. I am so glad to go through this issue. Congratulations to you and your team.

Let me tell you frankly that I came on this earth after Bapu's exit, so I have as such no connections with the Mahatma. But that is the reason for me to be with Gandhiji for ever. I would not like to leave him now.

I have contributed in my small capacity a good amount of literature on Gandhiji in the form of you tube videos called *bapuni vato*. In addition, I write a daily column on Bapu in three daily newspapers of the Janm bhumi Trust that appear throughout the year. Further I have published a 400 hundred page book entitled Gandhi *Vasrika*, as well as more than 100 articles on the life of Mahatma Gandhi. Though I would prefer not to say all these things, nonetheless I thought that this might provide you with an insight into my Gandhian background.

May I request you to please keep me on the mailing list of your institute so that I may receive updates about your various programmes. I may also try to participate in some of your events.

Thanks once again for this nice gift.

Dr. Bhadrayu Vachhrajani
Gujarat

◆◆◆

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

शबरम विरमानी, कबीर यात्रा, राजस्थान २६.०२.२०२०

सुरेश गायकवाड, असिन्टंट डायरेक्टर, इनकम टॅक्स, पुना २७.०२.२०२०

कॉमर्स कॉलेज, मोर्शी के छात्र वृंद, अमरावती २९.०२.२०२०

सदाशिव वाघमारे. डिवायएसपी, नासिक ११.०३.२०२०

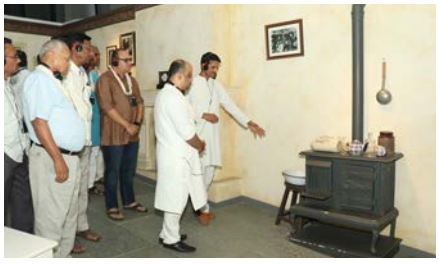

डॉ. पुरुषोत्तम, विश्व फाउण्डेशन, अक्कलकोट, महाराष्ट्र १२.०३.२०२०

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

चित्र शृंखला – ०३

महात्मा को नमन

महात्मा गाँधी के अंतिम समय की रोचक जानकारी को प्रस्तुत करती 'महात्मा को नमन' चित्र श्रृंखला

महात्मा गाँधी के पार्थिव शरीर को दिन के आरंभ में दर्शनार्थ रखा गया था और उनके सम्मान में भारतीय झंड़ा आधा झुका हुआ था।

क्या आप जानते है?

महात्मा गाँधी के सम्मान में भारत ने अपना राष्ट्रध्वज तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपना झंडा आधा झुकाया था।

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:

Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)

प्रकाशन: २ अप्रैल, २०२०